पाठ 5.2 : मेघालय का एक गाँव : मायलिनोंग

अनीता सक्सेना

CL4J76

अनीता सक्सेना *का जन्म 7 नवम्बर सन् 1956 ई. को ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ। वे कला व साहित्य के क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में भोपाल में रहती हैं। उन्हें राज्यपाल द्वारा मध्य प्रदेश की स्टार यूनिसेफ वॉलंटियर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने देश–विदेश में कई जगहों की यात्राएँ की हैं। उनके यात्रावृत्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। टेलीविजन और आकाशवाणी के कार्यक्रमों में कहानी, कविता, पठन के माध्यम से सक्रिय हैं।*

हाल ही में मुझे मेघालय जाने का मौका मिला। मेघालय (यानी बादलों का घर) की राजधानी शिलांग है। वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि शिलांग से 75 किलोमीटर दूर घने जंगलों के बीच बसा है, एशिया का सबसे साफ–सुथरा गाँव कहा जानेवाला मायलिनोंग। और मैंने वहाँ जाने का मन बना लिया।

हमारी यात्रा शुरू हुई। जल्द ही हम पहाड़ों के ऊपर थे। कहीं पहाड़ी झरने गिर रहे थे तो कहीं घने जंगल थे। मैंने देखा कि लोगों ने बाँस को आधा काटकर उसकी नाली बना दी थी, इससे पहाड़ से तेज धार में गिरनेवाले पानी को उसका सहारा मिल गया था।

आसमान में रुई के फाहों जैसे बादल उड़ रहे थे। पहाड़ पर चढ़ते वक्त हमारी कार के काँच पर नन्हीं–नन्हीं बूँदें दिखने लगीं। मैंने कहा, ''अरे, बारिश आ गई!'' गोबिन कार रोककर बोला, ''नहीं मैडम जी, यह बारिश नहीं, बादल है। आप बाहर निकल कर देखिए जरा।'' और सच में बाहर बिलकुल बारिश न थी। कार के ऊपर से बूँद–बूँद मिलकर पानी की धारा बहने लगी थी लेकिन ऐसे बाहर हाथ फैलाओ तो कुछ हाथ नहीं आता था। अद्भुत नजारा था! चारों तरफ सफेद बादलों का समंदर लहरा रहा था। जहाँ हम खड़े थे वहाँ से दस मीटर की दूरी पर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। सड़क से गुजरती सारी गाड़ियों ने अपनी इमरजेंसी लाइट जलाई हुई थीं। सामने से भी गाड़ियाँ आ रही थीं। सभी बहुत ही धीमे और एक के पीछे एक चल रही थीं ताकि कोई दुर्घटना न घट जाए। पहाड़ी रास्ता था। एक तरफ हजारों मीटर गहरी खाई थी, दूसरी तरफ पहाड़।

धुंध में रास्ता कुछ समझ नहीं आ रहा था। एक छोटी–सी जगह पर गोबिन ने गाड़ी रोककर एक टैक्सीवाले से द्वाकी का रास्ता पूछा। द्वाकी मुख्य सड़क पर बसा एक छोटा सा शहर है। टैक्सीवाला बोला, ''मैं वहीं जा रहा हूँ। मेरे पीछे–पीछे चले आओ।'' सारी बातचीत गोबिन के माध्यम से असमी में ही हो रही थी। हिंदी यहाँ कम ही बोलते हैं। धुंध में हम उसके पीछे–पीछे चल दिए।

आगे जाकर पोनटोंग नाम की एक जगह आई जहाँ से एक रास्ता द्वाकी जा रहा था और दूसरा मायलिनोंग । वहाँ उस सूमो के ड्राइवर ने गाड़ी रोकी और काँच खोलकर इशारा किया कि इस तरफ चले जाइए और हमारी गाड़ी वहाँ से अठारह किमी दूर मायलिनोंग की तरफ बढ़ चली।

ट्रेवल मैगज़ीन "डिस्कवर इंडिया" द्वारा 2003 में मायलिनोंग को 'एशियाज क्लीनेस्ट विलेज' की उपाधि दी गई। इसके बाद 2005 में इसे भारत का सबसे साफ गाँव घोषित किया गया। यहाँ कचरा डालने के लिए जगह–जगह बाँस की टोकरियाँ लगाई गई हैं। इनमें इकट्ठे हुए कचरे से फिर खाद बनाई जाती है। आम जनता के लिए सड़क किनारे बने साफ़–सुथरे शौचालय हैं।

मायलिनोंग में हमारा गाइड हेनरी बना। हेनरी यहाँ घूमने आए लोगों को गाँव दिखाने और उनके रहने–खाने की व्यवस्था का काम करता है। वह अंग्रेजी और खासी दो भाषाएँ जानता है।

हेनरी सबसे पहले हमें ट्री हाउस और बाँस के कॉटेज दिखाने ले गया। वे बेहद खूबसूरत थे, उन्हें हेनरी के पिता ने बनाया था। ट्री हाउस बनाने के लिए सड़क के दोनों ओर के बड़े–बड़े पेड़ों को बाँस से जोड़ा गया था, उसके ऊपर मचान जैसा एक घर बना था। नीचे बाँसों की सीढ़ी से एक घुमावदार रास्ता बना था। सारा काम बाँस का ही था। यहाँ तक कि बाँधने के लिए भी बाँस की ही पतली छालें इस्तेमाल की गई थीं। मैं ट्री हाउस में एकदम ऊपर तक चढ़ गई। ट्री हाउस की छत से दूर तक एक समन्दर दिखा। यह बांग्लादेश में आई बाढ़ का पानी है। बांग्लादेश यहाँ से सिर्फ तीन किलोमीटर दूर है। लोग पैदल ही वहाँ आना–जाना कर सकते हैं।

लाइव रूट ब्रिज

हम लोग लाइव रूट ब्रिज के रास्ते की ओर चल दिए। गाँव के अन्दर से ही नीचे जंगल की तरफ उतरना था। शुरू में तो कोई दिक्कत नहीं हुई पर जब खड़ी चट्टानों से उतरना पड़ा तो फिसलने की चिन्ता हुई। मुझे यह ख्याल बार–बार सताने लगा कि चढ़ते समय क्या हाल होगा। खैर, हम धीरे–धीरे नीचे उतरते गए। कहीं–कहीं पर पक्की सीढ़ियाँ भी बनी थीं। चारों तरफ घना जंगल था। हमारे सिवा वहाँ और कोई नहीं दिख रहा था। शायद कम ही लोग आते होंगे यहाँ।

नदी के तेज बहाव की आवाज आ रही थी। जल्दी ही रूट ब्रिज हमें दिखाई दे गया। अद्भुत दृश्य था– नीचे तेज बहती वॉह थिलोंग नदी और उसके ऊपर लाइव रूट ब्रिज यानी रबर के पेड़ों की मोटी–मोटी जड़ों को जोड़–जोड़ कर बनाया गया पुल। ऐसी जड़ें जिन्हें कहीं से भी बाँधा नहीं गया था। जो स्वाभाविक रूप से

जुड़ी हुई थीं। पुल अच्छा–खासा चौड़ा था। उस पर बीच में मिट्टी बिछी हुई थी और गोल–गोल पत्थर रखे हुए थे।

हेनरी ने बताया कि यह पुल बहुत मज़बूत है। तीस लोग भी खड़े हो जाएँ तो इसका कुछ नहीं बिगड़ने वाला। हम लोग पुल पार कर उसके दूसरी तरफ पहुँचे। वहाँ दूसरे गाँव जाने के लिए पहाड़ काटकर सीढ़ियाँ बनाई गई थीं। हम लोगों ने चारों तरफ से पुल का मुआयना किया। हर तरफ से वह और ज्यादा सुंदर दिखता। यह कुदरत नहीं इंसान का करिश्मा था।

इस बीच हम हेनरी के पिता से मिले। मैंने उनको अभिवादन किया तो उनके चेहरे की झुर्रियों के बीच एक भोली–सी मुस्कान छा गई। उनकी उम्र करीब साठ–बासठ होगी। वे सिर्फ खासी भाषा जानते थे। हेनरी हमारा दुभाषिया बना।

मैंने पूछा, "आपका नाम क्या है?"

वे कुछ बोलते इससे पहले हेनरी बोल पड़ा– ''दिसम्बर।"

"हाँ, मैडम जी। इनका नाम दिसम्बर और मेरी माँ का नाम है फेस्टिवल। यहाँ ऐसे ही नाम रखे जाते हैं। आपको गाँव में वोडाफोन, आइडिया, एयरटेल जैसे नाम भी मिल जाएँगे। जो नाम सुने जाते हैं वही रख दिए जाते हैं। यहाँ महीनों के नाम पर, सप्ताह के दिनों के नाम पर भी लोगों के नाम हैं।"

दिसम्बर जी से मेरी बातचीत शुरू हुई। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने दादा से इस पुल के बारे में सुना था। खासी जनजाति के लोगों का मकसद, ऐसे पुल नोवेत गाँव से रिवाई गाँव को जोड़ना है।

पुल बनाने की इस परंपरा को एक विशेष जनजाति के लोगों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी जीवित रखा है। आज वे कहाँ पुल बना रहे होंगे कोई नहीं जानता। एक पुल बनाने में करीब सौ साल लग जाते हैं। लाइव रूट ब्रिज बनाने के लिए सबसे पहले रबर के पौधों को सोचे–समझे तरीके से लगाया जाता है। जब पौधे बड़े होने लगते हैं और उनकी हवाई जड़ें (सपोर्टिंग रूट्स) बाहर लटकने लगती हैं तब उनको बाँसों से चोटी की तरह गूँथते हुए चलते हैं। यह कोई एक दिन का काम नहीं होता, न ही एक महीने का, क्योंकि जीवित पेड़ों की जड़ें तब तक बढ़ नहीं जातीं तब तक उन्हें बाँधा नहीं जा सकता। रस्सी की तरह बढ़ती ये जड़ें चिपकती जाती हैं। एक–दूसरे से बँधती जाती हैं, धीरे–धीरे बाँसों की जगह बदलती जाती हैं। हमने जो पुल देखा वह करीब तीन सौ साल पुराना है।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा था। ''ऐसे पुल और कहाँ हैं?'' मैंने पूछा। उन्होंने बताया कि चेरापूँजी के पास डबल–डेकर पुल हैं, यानी एक पुल के ऊपर एक और पुल।

अचानक मुझे ट्री हाउस याद आया। मैंने उनसे इशारे में कहा कि आपने बहुत ही सुन्दर घर बनाया है तो वे मुस्कुरा उठे। ''कितने दिन लगे इसे बनाने में?'' मैंने पूछा।

हेनरी ने बताया, ''दो महीने।''

मैंने पूछा ''आपने ट्री–हाउस के सहारे के लिए जो बड़े–बड़े पेड़ों के तने लगाए हैं वे किस पेड़ के हैं?'' वे बोले ''कटहल के।''

दिसम्बर जी से बात करते–करते समय का पता ही नहीं चला। बाहर अँधेरा हो गया था और बारिश भी हो रही थी। वैसे भी यहाँ रात जल्दी हो जाती है। हेनरी ने जब कहा कि आप खाना खाकर सो जाइए तो हम फौरन मान गए। हम थक भी बहुत गए थे।

हेनरी की बहन सारा ने बहुत स्वादिष्ट दाल–चावल और परवल की सब्जी बनाई थी। उसे खाकर हम लोग गहरी नींद में सो गए।

सारी रात बारिश होती रही। सुबह उठे तो बिजली गायब थी। बाहर बादलों ने हमें चारों तरफ से घेरा हुआ था। अच्छा हुआ जो कल हम रूट ब्रिज देख आए थे। आज तो जाना संभव ही नहीं होता।

यहाँ चूँकि बारिश बहुत तेज होती है इसलिए हरियाली ज़्यादा और धूल कम है। यहाँ खासतौर पर सुपारी, काली मिर्च, तेज पत्ता, बाँस, फूल–झाड़ू, कटहल, लीची, अनन्नास, संतरा, केला आदि के पेड़ मिलते हैं। यहाँ मैंने पिचर प्लांट भी देखा। छोटे–छोटे कीड़े जब उसके पास पहुँचते हैं तो वह झट से ढक्कन बंद कर देता है। जब वे कीड़े मर जाते हैं तब उनको खा जाता है।

नीचे पहाड़ पर लकड़ी के बड़े–बड़े खम्बों के सहारे बनी कॉटेज में दो बड़े–बड़े कमरे, शौचालय और एक डायनिंग रूम था। सब कुछ बना था लकड़ी और बाँस का। बाँस की चटाइयों की दीवारें और छत सुपारी व झाडू के पत्तों से बनी है। छत इतनी मज़बूत और वाटर प्रूफ है कि लगातार होनेवाली बारिशों में भी एक भी बूँद पानी अन्दर नहीं टपकता।

घने जंगल और पहाड़ों के बीच बसा होने के कारण मायलिनोंग किसी भी कमी का एहसास नहीं कराता। यहाँ लोग पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करते। हेनरी ने बताया कि मायलिनोंग में 94 परिवार बसे हुए हैं। यहाँ कुल 506 लोग रहते हैं। साक्षरता की दर यहाँ सौ प्रतिशत है। गाँव में दो स्कूल हैं– एक खासी और एक अंग्रेजी माध्यम का। सभी बच्चे पढ़ने जाते हैं। आठवीं के बाद पढ़ाई के लिए बच्चे शिलांग जाते हैं।

यहाँ के लोग खाना मिट्टी के चूल्हे पर बनाते हैं। चूँकि यहाँ बारिश ज्यादा होती है इसलिए चूल्हे के ऊपर बने एक झूले में लकड़ियाँ सुखाने के लिए रख दी जाती हैं, गर्म धुएँ से लकड़ियाँ सूख जाती हैं। इनका कपड़े सुखाने का तरीका भी निराला है, इन्होंने बाँस का एक बड़ा–सा पिंजरा बनाया हुआ है, जिसके नीचे कोयले के जलते हुए अंगार रख देते हैं और ऊपर कपड़े फैला दिए जाते हैं, हल्की गर्मी के ताप से कपड़े सूख जाते हैं।

मायलिनोंग में एक छोटी–सी दुकान है जो साबुन, मोमबत्ती, माचिस वगैरह छोटी–मोटी जरुरतों को पूरा करती है। मायलिनोंग से दो टैक्सियाँ हर रोज सुबह शिलांग जाती हैं और शाम को वापस आती हैं। यहाँ के लोग आटा, दाल, चावल, हरी सब्जियाँ तथा खाने–पीने का हर सामान शिलांग से ही लाते हैं। यहाँ सब्जी, अनाज कुछ भी पैदा नहीं होता। हाँ मछली, सुअर, मुर्गियाँ जरुर पाली जाती हैं। हेनरी ने बताया कि शिलांग से मायलिनोंग के बीच सड़क बने बारह साल हुए हैं। इसके पहले आना–जाना और मुश्किल था। गाँव के मुखिया को सभी हेडमैन कहते हैं, उन्होंने गाँव को साफ़–सुथरा रखने के लिए नियमों को जगह–जगह लगा रखा है। जिसका सभी गाँववाले पालन करते हैं।

रूट ब्रिज के रास्ते में मैंने बड़े बच्चों को एक रोचक खेल खेलते देखा। केले के एक तने को उन्होंने जमीन में गाड़ दिया था। दूर एक रेखा खिंची हुई थी जिसके पीछे खड़े होकर वे नुकीले तीर से उस तने को भेदने की कोशिश कर रहे थे। आसपास खड़े बच्चे निशाना लगने पर तालियाँ बजा रहे थे।

हम भी इस अनूठी जगह के लिए मन ही मन तालियाँ बजाते हुए आगे बढ़ गए...........

शब्दार्थ

मुआयना – निरीक्षण; **दुभाषिया** – दो भाषा–भाषी लोगों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला; **मकसद** – उद्देश्य।

अभ्यास

पाठ से

1. मायलिनोंग गाँव में बने घरों व कॉटेज की क्या विशेषताएँ हैं?
2. पहाड़ पर चढ़ते हुए दृश्य को लेखिका ने अद्भुत क्यों कहा है?
3. गाँव के पुल का नाम ''लाइव रूट ब्रिज'' ही क्यों रखा गया होगा?
4. ''यह कोई एक दिन का काम नहीं होता, न ही एक महीने का।'' लाइव रूट ब्रिज के बारे में ऐसा क्यों कहा गया?
5. मायलिनोंग में किस प्रकार के पेड़–पौधे पाए जाते हैं? और स्थानीय लोग इनका किस–किस तरह से उपयोग करते हैं?
6. मायलिनोंग को एशिया और भारत का सबसे स्वच्छ गाँव घोषित किया गया। ऐसी कौन–कौन सी विशेष बातें हैं, जिनके कारण इसे यह सम्मान प्राप्त हुआ?

पाठ से आगे

CLDF8T

1. मायलिनोंग में लोगों के नाम हमारे और आपके नामों से भिन्न रखे जाते हैं, जैसे– फेस्टिवल, वोडाफोन, एयरटेल, दिसम्बर आदि।

(क) कल्पना करके लिखिए कि मायलिनोंग के लोगों ने और कौन–कौन से नए नाम रखे होंगे?

(ख) सुखिया की काकी का नाम 'बुधवारी बाई' है क्योंकि वह बुधवार के दिन पैदा हुई थी। इसी प्रकार आपके आसपास भी ऐसे लोग होंगे जिनके नाम से कोई न कोई रोचक बात जुड़ी होगी । अपने साथियों व बड़ों से बातचीत करके ऐसे नामों व उसके बारे में पता कीजिए और लिखिए।

2. मायलिनोंग में कटहल के बड़े तनों पर ही ट्री हाउस बनाए जाते हैं तथा रबर के पेड़ों की जड़ों से ब्रिज तथा बाँस के पेड़ों से घर की नालियाँ, दीवारें आदि बनाई जाती हैं। यदि यही सब कुछ हमारे यहाँ बनाया जाए तो कौन–कौन से पेड़ों का उपयोग किया जाएगा और क्यों।

		पेड़	क्यों?
(क) ट्री हाउस	–	....	....
(ख) घर की दीवारें	–	....	....
(ग) घरों की छतें	–	....	....
(घ) यदि ब्रिज बनाना हो तो–		....	....

3 आपने किसी ऐसे प्राकृतिक स्थान का भ्रमण अपने परिवार या स्कूल के विद्यार्थियों के साथ किया होगा उसका वर्णन इस प्रकार कीजिए कि पढ़नेवाले उसे पढ़कर उस स्थान के बारे में अच्छे से समझ पाएँ।

4. लेखिका ने हेनरी के लिए एक शब्द का प्रयोग किया है 'दुभाषिया' अर्थात दो भाषा–भाषी लोगों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला।

(क) आपके आस–पास लोग कौन–कौनसी भाषाएँ/बोलियाँ बोलते हैं? लिखिए।

(ख) यदि आपको कोई अन्य भाषा–भाषी व्यक्ति से बात करना हो और आप एक–दूसरे की भाषा नहीं जानते हों तब आप एक दूसरे से कैसे बात करेंगे?

भाषा के बारे में

1. 'जड़' के लिए पाठ में कई विशेषण शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे– मजबूत, मोटी–मोटी, हवाई आदि। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के लिए कौन–कौनसे विशेषण शब्द प्रयुक्त किए जा सकते हैं? सोचकर लिखिए।

   बादल –
   रास्ता –
   बारिश –
   पुल –
   साड़ी –
   पेड़ –
   नदी –

CLHBAG

2. पाठ में एक शब्द प्रयुक्त हुआ है– 'अद्‌भुत नज़ारा', इसमें से अद्‌भुत शब्द हिंदी का है और नज़ारा उर्दू का। हम बोल–चाल में इस तरह से भाषाओं का मिला–जुला प्रयोग करते हैं। आप इसी तरह के कुछ अन्य शब्द खोजकर लिखिए।

3. 'बाँस', व 'सड़क' दोनों संज्ञाएँ व्यंजनांत हैं। लेकिन 'बाँस' का बहुवचन 'बाँस' ही रहता है पर 'सड़क' का 'सड़कें' हो जाता है।

   जैसे– दस सड़कें, कई सड़कें
   दस बाँस, कई बाँस

   पाठ में अन्य संज्ञाएँ ढूँढ़िये और बहुवचन बनाने के नियमों पर चर्चा कीजिए।

योग्यता विस्तार

गतिविधि

1. इस यात्रा वृत्तांत की लेखिका को एक पत्र लिखिए, जिसमें आप निम्नांकित बिन्दुओं की मदद ले सकते हैं–
   - आपको उनका लेख कैसा लगा?
   - इस गाँव के बारे में आप और क्या–क्या जानना चाहते हैं?
   - अपनी किसी यात्रा से जुड़े अनुभव या घटना को भी साझा कर सकते हैं।

2. चेरापूँजी के डबल–डेकर रूट ब्रिज की कल्पना करके चित्र बनाइए।

CLH7C4

3. यदि आप अपने गाँव / शहर को सबसे स्वच्छ / सुन्दर बनाना चाहते हैं तो निम्नांकित स्तरों पर क्या–क्या कार्य करने की आवश्यकता है–

- स्वयं के स्तर पर
- प्रशासनिक स्तर पर
- पंचायत स्तर पर।

4. एक समाचार पत्र में प्रकाशित इस खबर को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

ये है एशिया का सबसे क्लीन गांव

503 लोगों की आबादी | **91** घर ही गांव में

2003 में इंडिया डिस्कवरी मैग्जीन ने गांव को दी थी 'एशियाज क्लीनेस्ट विलेज' की उपाधि।

स्वच्छ भारत अभियान से जुड़कर भले ही देश बाद में सफाई का महत्व समझें, पर मेघालय के एक गांव के लोग पहले ही इसे समझ चुके हैं। ये गांव है माव्लिननोंग। ये एशिया का सबसे साफ गांव है। गांव के हर घर में शौचालय है।

चमचमाती सड़कों के अलावा और भी बहुत कुछ है यहां। साथ ही बच्चे से लेकर बड़े बुजुर्ग तक साफ-सफाई के प्रति गंभीर रहते हैं। 2007 में यहां के ग्रामीणों ने निर्मल भारत अभियान के तहत हर घर में शौचालय बनवा लिए थे।

इसी तरह आदर्श ग्रामपंचायत अथवा स्वच्छ ग्राम से संबंधित समाचारों को एकत्र करें?